SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में ग्रामीण प्रवास से शहरी भूमि उपयोग पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

दीनानाथ ठाकुर, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत
प्रदीप कुमार सिंह, (Ph.D.), भूगोल विभाग,
मार्खम कॉलेज ऑफ कामर्स, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

दीनानाथ ठाकुर, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत
प्रदीप कुमार सिंह, (Ph.D.), भूगोल विभाग,
मार्खम कॉलेज ऑफ कामर्स, हजारीबाग,
झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/08/2022
Revised on : -----
Accepted on : 13/08/2022
Plagiarism : 00% on 08/08/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, August 08, 2022
Statistics: 0 words Plagiarized / 3687 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में ग्रामीण प्रवास से शहरी भूमि उपयोग पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन शोधार्थी दीनानाथ ठाकुर (यूजीसी नेट) स्नातकोत्तर भूगोल विभाग विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, शोध निदेशक डॉ० प्रदीप कुमार सिंह विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर भूगोल विभाग मार्खम कॉलेज ऑफ कामर्स विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग सारांश प्रस्तुत शोध पत्र में हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में ग्रामीण

प्रवास से शहरी भूमि उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रवास मानव की प्रवृति है, वह अपनी आवश्यकता को पुरा करने के लिए प्रवास करता ही रहता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इन्हीं प्रवास की प्रवृति को स्पष्ट किया गया है। जो अधिकांशतः ग्रामीण से शहरों की ओर देखने को मिलता है, ऐसी स्थिति में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो की भूमि उपयोग प्रारूप प्रभावित होती है। इस शोध पत्र का मुख्य उदेश्य ग्रामीण

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में ग्रामीण प्रवास से शहरी भूमि उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रवास मानव की प्रवृति है, वह अपनी आवश्यकता को पुरा करने के लिए प्रवास करता ही रहता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इन्हीं प्रवास की प्रवृति को स्पष्ट किया गया है जो अधिकांशतः ग्रामीण से शहरों की ओर देखने को मिलता है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो की भूमि उपयोग प्रारूप प्रभावित होती है। इस शोध पत्र का मुख्य उदेश्य ग्रामीण प्रवास का अध्ययन करना एवं शहरी भूमि उपयोग पर पड़ने वाले प्रभावों का व्याख्या करना। इस शोध पत्र को पुरा करने के लिए प्राथमिक आँकड़े, द्वितीयक आँकड़े के साथ–साथ यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का उपयोग किया गया। शहरी उपांत पेटी के 6 पंचायत, जिसमे ओकनी, कोलघट्टी, सिंदुर, लाखे, सिंघानी एवं नयाखाप का नमूना एकत्रित कर विश्लेषण किया गया है। शहरी उपांत पेटी के 6 पंचायत में कुल जनसंख्या 39057 है, जिसमें औसतन 42 प्रतिशत ग्रामीण प्रवास की हिस्सेदारी है। इनके प्रवास का मूल कारण शिक्षा, रोजगार, व्यापार, चिकित्सा, मनोरंजन एंव पर्यटन है। इन्ही कारणों से ये शहरों की ओर दैनिक, मासिक, वार्षिक एवं स्थायी प्रवास करते है जिसके परिणामस्वरूप शहरी भूमि में प्रभाव देखने को मिलता है। जिसमें शहरीकरण (1991 में 51.5 प्रतिशत, 2001 में 53.2 प्रतिशत, 2011 में 59.23 प्रतिशत), भूमि मुल्य में वृद्धि, आवासीय स्वरूप में परिर्वत्तन, शिक्षण संस्थान की संख्या में वृद्धि, मलिन बस्ती का विकास, शहरी ऊष्मा द्वीप का विकास, शहरी फैलाव, सुपरमार्केट का विकास, बहुउदेश्यात्मक अस्पताल का विकास एवं प्रदुषण की समस्या मुख्य है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण प्रवास, शिक्षा, रोजगार, उद्योग, चिकित्सा.

परिचय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज या समुदाय में रहना पसंद करता है। साथ ही यह गतिशील भी है, जो एक स्थान से दुसरे स्थान की ओर निरंतर गमन या प्रस्थान करता है। मनुष्य जिस स्थान को छोड़ता है वहाँ के ज्ञान, तकनीक, संस्कृति आदी को ग्रहण करता है। वास्तव में यह मनुष्य की सांस्कृतिक विसरण प्रक्रिया है जिसमें मानव एक सामाजिक परिवेश से दुसरे सामाजिक परिवेश की ओर सांस्कृतिक तत्त्वों का प्रसार करती है।

"प्रवास सामान्यतः निवास स्थान को बदलते हुए एक भौगोलिक इकाई से दुसरे भौगोलिक इकाई के लिए भौगोलिक गतिशिलता का एक रूप है।" (डॉ० एस० डी० मौर्य, जनसंख्या भूगोल)

प्रवास वास्तव में केवल स्थान परिवर्तन को ही इंगित नहीं करता है बल्कि प्रदेश के क्षेत्रीय तत्व एवं क्षेत्रीय संबंधों के परिवर्तनशील स्वरूप का भी अध्ययन करता है।

प्रवास और भूमि उपयोग के बीच वर्तमान में जटिल सहसंबंध है। जहां से जनसंख्या उत्प्रवास करती है और जहां आप्रवास करती है दोनों की भूमि उपयोग प्रारूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। इसमें आकर्षण एवं प्रतिकर्षण शक्तियां मुख्य भूमिका में होती है वर्तमान में शहरीकरण एक अपरिहार्य प्रक्रिया है जिसमें वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तेज कर दिया है। दुनिया भर में शहरीकरण के विकास से ग्रामीण लोगों की तुलना में शहरी बस्तियों में रहने वाले लोगों की संख्या का प्रचलन बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास केवल आर्थिक कारक से संभव है।

भूमि उपयोग भूमि के विभिन्न कार्यिक स्वरूप को इंगित करता है। यदि प्रवास के साथ सहसंबंध को देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि उपयोग का स्वरूप एवं नगरीय क्षेत्रों में इनके स्वरूप में विविधता लिए हुए है। जनसंख्या का प्रवास शहरी क्षेत्रों की ओर होता है, तो शहरी भूमि उपयोग की वर्तमान प्रारूप प्रभावित होती है। इसमें शैक्षणिक संस्थान और औद्योगिक गतिविधियां प्रभावित हो जाती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ (2014) के रिपोर्ट के मुताबिक ''वर्तमान में वैश्विक आबादी का 44 प्रतिशत शहरों में रहती है जो कि वर्तमान समय में यह अनुभव किया गया है कि झारखंड जैसे पिछड़े राज्य की जिलों में ग्रामीण प्रवास तेजी से बढ़ रहा है। झारखंड में अप्रवासन और पलायन दोनों पुरुषों में 15.82 प्रतिशत जबकि महिलाओं का 54.29 प्रतिशत व कुल 34.30 प्रतिशत देखा गया है। हजारीबाग जिले में यह पुरुष अप्रवासन 20.43 प्रतिशत, पलायन 24.94 प्रतिशत दर है। जिला का कुल अप्रवासन 46.00 प्रतिशत एवं पलायन 47.80 प्रतिशत देखा जाता है।

हजारीबाग जिले के हजारीबाग सामुदायिक विस्तार प्रखंड के कुल 24 पंचायत के 95 गांव में से शहरों की ओर पलायन अधिकांशतः नगर निगम के उपांत पेटी में देखा जाता है। उपांत पेटी के ग्राम पंचायत में ओकनी, कोलघट्टी, सिंदूर, सिंघानी, लाखे और नयाखाप में दिखाई देती है। सभी ग्राम पंचायत 2011 के आधार 42 इस प्रखंड की अनेक जनसंख्या बड़े राज्यों की ओर मजदूरी और रोजगार के लिए गमन करती है, इसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, दिल्ली, तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान जैसे राज्य शामिल है। हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के नगरनिगम क्षेत्रों की ओर ग्रामीण जनसंख्या प्रवास (महिला एवं पुरुष) कर रही है। इसके प्रवास के निम्न कारक जिम्मेदार हैः

1. **आकर्षक कारक**

- रोजगार के अवसर की उपलब्धता।
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
- आवागमन के सुविकसित साधन।
- उच्च शैक्षणिक गतिविधियां।
- मनोरंजन की व्यापक सुविधा ।

- ➢ चिकित्सकीय सुविधा का विकास ।
- ➢ सुव्यवस्थित औद्योगिक इकाइयों का विकास ।
- ➢ शहरीकरण एवं आधारभूत आवश्यकताओं की परिपूर्णता ।

2. **प्रतिकर्षण कारक**

- ➢ कृषि भूमि में गिरावट।
- ➢ निम्न शैक्षणिक गतिविधियां।
- ➢ रोजगार।
- ➢ एकल परिवार प्रथा।
- ➢ सामाजिक संस्कार।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र हजारीबाग जिला के अंतर्गत हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड है। इनका अक्षांशीय विस्तार $23^0$57′49′′–$24^0$01′46′′ उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार $85^0$20′00′′–$85^0$27′26′′ पूर्वी भाग तक विस्तृत है। इसका कुल क्षेत्रफल 312.43 वर्ग किलोमीटर है। यहां की शहरी जनसंख्या 1991 में 202345, 2001 में 270664 एवं 2011 में 290098 देखी गई है। यहां दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2001 में कुल 33.8 प्रतिशत (ग्रामीण 29.1, शहरी 68.2 प्रतिशत) एवं 2001–2011 में 7.18 प्रतिशत (ग्रामीण –6.61, शहरी – 19.30 प्रतिशत) पाया गया। अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत शहरी जनसंख्या वृद्धि दर 1991 (51.5 प्रतिशत), 2001 (53.2 प्रतिशत), 2011 (59.2 प्रतिशत) रही।

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत 25 ग्राम पंचायत एवं 94 गांव और 3 जनगणना शहर (मेरु, मरईकला, ओकनी 2) शामिल है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर में इचाक प्रखंड, दक्षिण में बड़कागांव, पूर्व में दारू एवं पश्चिम में कटकमदाग और कटकमसांडी शामिल है। इस प्रखंड की साक्षरता दर 77.56 प्रतिशत (पुरुष–85.90 प्रतिशत, महिला– 68.12 प्रतिशत) है। इस प्रखंड में हजारीबाग जिले की कुल जनसंख्या का 80.56 प्रतिशत हिंदू ,16.21 प्रतिशत मुस्लिम, 0.99 प्रतिशत ईसाई है। यहां किसान 9.02 प्रतिशत, खेतीहर मजदूरी 7.43 प्रतिशत, घरेलू उद्योग 2.38 प्रतिशत एवं श्रमिक 81.17 प्रतिशत हैं।

(स्त्रोतः सेंसस ऑफ इंडिया लोकेशन)

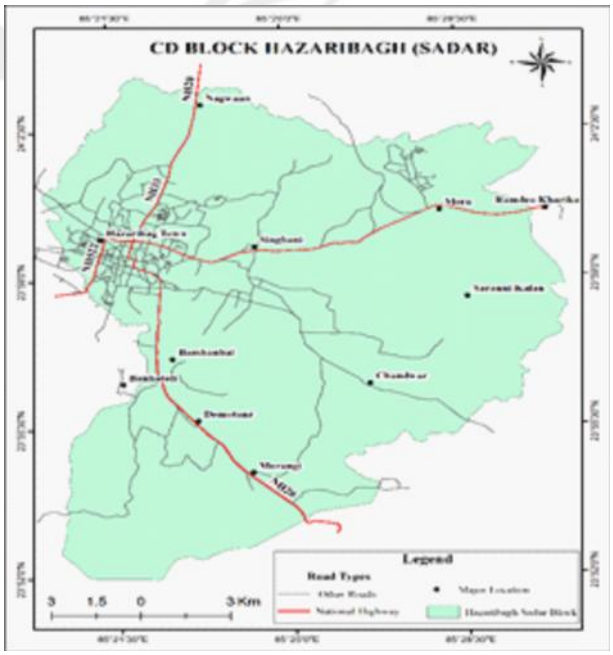

(स्त्रोतः सेंसस ऑफ इंडिया लोकेशन)

(स्त्रोतः सदर ऑफिस, हजारीबाग)

उद्देश्य

शोध पत्र की समस्या से संबंधित निम्न उद्देश्य हैः

- हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के अंतर्गत ग्रामीण प्रवास के वर्तमान वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना।
- ग्रामीण प्रवास के शहरी भूमि उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध विधि

- **प्राथमिक आंकड़ा विधिः** अवलोकन एवं साक्षात्कार।
- **द्वितीयक आंकड़ा विधिः** प्रखंड कार्यालय, वेबसाइट एवं हजारीबाग नगरपालिका, नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार।
- **प्रतिदर्श विधिः** यादृच्छिक प्रतिर्दश विधि, शहरी उपांत पेटी के 6 पंचायत, जिसमे ओकनी, कोलघट्टी, सिंदुर, लाखे, सिंघानी एवं नयाखाप।
- **विश्लेषणात्मकः** सह–वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध विवेचना

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के ग्रामीण प्रवास का प्रभाव शहरी क्षेत्र के भूमि उपयोग पर काफी मात्रा में देखने को मिलता है। इस शोध पत्र में शहरी उपांत पेटी के ग्राम पंचायत (ओकनी, कोलघट्टी, सिंदूर, सिंघानी, लाखे और नयाखाप) में कुल जनसंख्या 39057 है, जो कि ग्रामीण प्रवास में 42.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी देती है। यहां से ग्रामीण प्रवास विविधता लिए हुए हैं, कुछ विशेष स्थिति में गांव से गांव प्रवास होती है जैसेः विवाह संस्कार। वास्तव में यह संपूर्ण जिला का मुख्य सदर क्षेत्र है इसलिए यहां जनसंख्या का प्रवास शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, चिकित्सीय सुविधा एवं गुणवत्तायुक्त जीवन के लिए स्थाई, मौसमी, दैनिक और वार्षिक प्रवास देखने को मिलते हैं।

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में प्रवास का स्वरूप (प्रतिदर्श ग्राम पंचायत–6),2011

पंचायत	कुल जनसंख्या	प्रवासित आबादी प्रतिशत में
ओकनी	11106	53.05
केलघट्टी	6134	48.35
सिंदूर	5698	36.07
सिंघानी	5014	47.01
लाखे	4899	49.19
नयाखाप	6206	23.23

(स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, 2011)

उपरोक्त तालिका के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि इस सामुदायिक विकास प्रखंड में प्रवास का स्वरूप हजारीबाग नगर निगम की ओर देखने को मिलता है। इस प्रतिदर्श पंचायत में सबसे अधिक 53.05 प्रतिशत शहरों में दैनिक और स्थाई रूप में प्रवास करता है, क्योंकि यह क्षेत्र का सबसे प्राचीन हिस्सा है। आज के समय में यह क्षेत्र ओकनी, शिवपुर और लोहसिंघना के रूप में जाना जाता है, जहां आवासीय रिहायशी मकान के रूप में विकसित है। कोलघट्टी पंचायत की 48.35 प्रतिशत, सिंदूर 36.07 प्रतिशत, सिंघानी 47.01 प्रतिशत, लाखे 49.19 प्रतिशत, और नयाखाप 23.23 प्रतिशत शहर में प्रवासी रहते हैं । वास्तव में यह उपांत पेटी है, यहां दैनिक, मौसमी, स्थाई प्रवास शामिल है। इस क्षेत्र के अलावे भी सदर प्रखंड से बाहर ईचाक, बड़कागांव, कटकमदाग, कटकमसांडी तथा दारू, विष्णुगढ़ प्रखंड से ही यहां शहरी क्षेत्र में जनसंख्या का प्रवास देखने को मिलता है।

विवेचना

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के अंतर्गत ग्रामीण समुदाय के प्रवास का शहरी क्षेत्र की ओर होने से अनेक समस्या उत्पन्न होती है। अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत अनेक जनसंख्या दैनिक प्रवास रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मार्केटिंग एवं अन्य गतिविधियों के लिए करती है।

ग्रामीण प्रवास शहरी क्षेत्र की ओर निम्न कारणों से देख सकते हैं:

रोजगार के साधन

यहां ग्रामीण जीवन का आधार कृषि है, लेकिन यहां कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। जब वर्षा में कमी होने लगती है तो कृषि क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों कम होने लगती है, ऐसी स्थिति में कृषि से निर्भर गतिविधियों में रोजगार सृजन नहीं हो पाता और बेरोजगारी उत्पन्न होने लगती है। इस अवस्था में शहरी क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का प्रवास होने लगता है क्योंकि शहरी क्षेत्रों में 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है।

शिक्षा एवं शिक्षण स्वास्थ्य संस्थान का आकर्षण

जनसंख्या का विशेषकर युवा महिला और पुरुष जनसंख्या का शहरी क्षेत्र की ओर आकर्षण का कारण शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता है। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का स्तर निम्न है लेकिन शहरों में इसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के आवागमन का आधार विनोबा भावे विश्वविद्यालय, संत कोलंबस कॉलेज, मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आन्नदा कॉलेज एवं महिला कॉलेज में के० बी० महिला महाविद्यालय, साथ ही सरकारी एवं गैर सरकारी कॉलेज स्थापित है।

चिकित्सीय आकर्षण

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र में से शहरों की ओर जनसंख्या प्रवास का आधार चिकित्सीय साधनों की सुविधा भी है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएं है इसलिए यह दैनिक प्रवास करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में चिकित्सीय सुविधा में सदर अस्पताल, बहुउद्देशीय आरोग्यम अस्पताल, साथ ही अनेक छोटे–बड़े 100 से अधिक अस्पताल एवं नर्सिंग होम स्थित है।

बाजार एवं व्यपारिक गतिविधियां

अध्ययन क्षेत्र के शहरी क्षेत्रों में सबसे अधिक जनसंख्या निवास करती है। ऐसी स्थिति में यहां वस्तुओं एवं सेवाओं का मांग भी अधिक है इसलिए कच्चा माल का व्यापार ग्रामीण समुदाय शहर क्षेत्रों में आकर करते हैं, साथ ही यहां अन्य उच्च गुणवत्ता वाले बड़े–बड़े मॉल एवं शॉपिंग कॉम्पलेक्स भी है। यहां लाखों की संख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास देखने को मिलता है। बाजार के रूप में यहां डेली मार्केट, झंडा चौक, इंद्रपुरी चौक, आन्नदा चौक, जिला चौक, मटवारी, कोर्रा प्रमुख है।

औद्योगिक प्रतिष्ठान एवं अन्य प्रतिष्ठान

इस अध्ययन क्षेत्र की शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या प्रवास एक प्रमुख कारण यहां की औद्योगिक प्रतिष्ठान, क्योंकि यहां दैनिक एवं स्थाई प्रवास देखने को मिलता है। यहां कृषि उद्योग, सीमेंट उद्योग, थर्माकोल सीमेंट उद्योग, सीमेंट खंभा उद्योग मुख्य हैं। शहरी क्षेत्र में उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अर्बन हाट स्थित है, यहां हस्तशिल्प संसाधन विकास केंद्र है। यहां अन्य प्रतिष्ठान जैसे प्लास्टिक सर्जरी, स्त्रियों से मुर्गी का चूजा का उत्पादन एवं डेयरी उद्योग, मत्स्य पालन उद्योग मुख्य हैं। इन सभी उद्योगों से रोजगार का सृजन होता है जिससे ग्रामीण जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षण का केंद्र है।

पर्यटन एवं मनोरंजन

अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक दृष्टि से सौंदर्य, सुगम्य, सौहार्दपूर्ण एवं स्फूर्तिदायक मौसम की अवस्थिति देखने को मिलती है। यहां कनहरी पर्वत, हजारीबाग झील, निर्मल महतो पार्क, जिला परिषद् पार्क जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। मनोरंजन की दृष्टि से यहां अनेक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक केंद्र स्थित है इसलिए यहां जनसंख्या का जमाव दिनों–दिन बढ़ते जा रहा है।

उपरोक्त सभी कारकों से जनसंख्या का प्रवास शहरी क्षेत्र की ओर देखने को मिल रही है। जब यहाँ जनसंख्या शहरों की ओर आती है तो शहरी भूमि उपयोग का पर प्रभाव डालती है।

नगर निगम की वर्तमान (2015–2016) भूमि उपयोग प्रारूप

संख्या	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल		नियोजन क्षेत्र का प्रतिशत	विकास क्षेत्र का प्रतिशत
		वर्ग किमी०	हेक्टेयर		
क.	**विकसित क्षेत्र**				
1.	आवासीय	22.96	2296	24.1	68.5
2.	वाणिज्यिक	0.49	49	0.5	1.5
3.	उद्योग	0.47	47	0.5	1.4
4.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	6.14	614	6.5	18.3
5.	परिवहन एवं संचार	2.82	282	3.0	8.4
6.	मनोरंजक खुली जगह	0.61	61	0.6	1.8
	उप–कुल क	33.50	3350	35.2	100.0
ख.	**अविकसित क्षेत्र**				
7.	प्राथमिक गतिविधि	55.12	5512	57.9	–
8.	जल क्षेत्र खुली जगह	3.17	317	3.3	–
9.	विशेष क्षेत्र	3.39	339	3.6	–
	उप–कुल ख	61.68	6168	64.8	–
	क + ख	95.17	9517	100.0	–

(स्रोतः नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार)

ग्रामीण प्रवास का शहरी भूमि पर उपयोग पर प्रभाव

जब ग्रामीण जनसंख्या शहरों की ओर प्रवास करती है तो निम्न प्रभाव देखने को मिलते हैं:

शहरीकरण

शहरी क्षेत्रों में भौतिक विस्तार को शहरीकरण कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का शहरों में जाकर रहना

और काम करना शहरीकरण कहलाता है। शहरीकरण या नगरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक समाज के समुदाय के आकार और शक्ति में वृद्धि होती रहती है। यह शहरीकरण पुल और पुस कारकों द्वारा संचालित होती है। हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या का प्रवास रोजगार के अवसर, शैक्षणिक संस्थान और शहरी जीवन शैली आकर्षक करने वाले मुख्य कारक है जो ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में जाने के लिए प्रेरित करता है।

हजारीबाग सी०डी० प्रखंड में जनसंख्या का दशकीय वृद्धि

वर्ष	1991	2001	2011
कुल	202345	270664	290098
ग्रामीण	98100	126644	118276
शहरी	104245	144020	171822

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका 2001–2011)

दशकीय वृद्धि दर 1991–2011

वर्ष	कुल	ग्रामीण	शहरी
1991–2001	33.8%	29.1%	38.2%
2001–2011	7.18%	6.61%	19.30%

शहरी जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2011

वर्ष	शहरी जनसंख्या	अंतर
1991	51.50%	-
2001	53.20%	1.70%
2011	59.23%	6.03%

शहरी भूमि के मूल्यों में वृद्धि

जब निरंतर शहरीकरण होता है तो शहरी भूमि के मूल्यों पर इसका प्रभाव देखने को मिलता है, क्योंकि शहरीकरण के परिणामस्वरुप यहां के भूमि उपयोग में परिवर्तन होता है, यहां सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्वरूप में अंतर देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र के शहरी भूमि में जनसंख्या का जमाव मुख्यतयाः लाखे, कोर्रा, मटवारी, दीपूगड़ा, ओकनी, शिवपुरी, खिरगांव, कोलघट्टी, कल्लू चौक एवं शहरी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। यहां भूमि का मूल्य काफी उच्च पाया जाता है, जैसे ऐसे क्षेत्रों में औसतन भूमि के मूल्य में लगभग 5 से 7 गुना विगत 20 वर्षों में वृद्धि देखा गया है। यहां औसतन भूमि मूल्य एक डिसमिल का 10 से 12 लाख तक माना जाता है।

27 जुलाई 2018 के राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग रांची की रिपोर्ट के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों की तरह शहरी क्षेत्रों की जमीन का भी निर्धारण होगा ऐसा बताया जाता है कि अगर किसी मौजे में 25 डिसमिल जमीन की बिक्री रूपये 10 में होती है तो उसका मूल्य उसे मौजे पर रूपये 40000 होगा।

शहरी उष्मा द्वीप का विकास

उष्मा द्वीप शब्द का प्रयोग वैसे क्षेत्रों के लिए किया जाता है जिस का तापमान आस–पास के क्षेत्रों की तुलना में गर्म होता है। वास्तव में यह मानव अशांत क्षेत्र को संदर्भित करता है। इस उष्मा द्वीप का विकास शहरी क्षेत्रों में शहरी जनसंख्या में वृद्धि, वन विनाश, आवास निर्माण, भीड़–भाड़ की समस्याओं के कारण देखने को मिल रही है। इस अध्ययन क्षेत्र में जब जनसंख्या का प्रवास देखा जाता है तो ऐसी स्थिति में यहां कोरा, लाखे, मटवारी चौक, इंद्रपुरी, झंडा चौक, पंचमंदिर आदि क्षेत्रों में उष्मा द्वीप का प्रभाव दिखाई देता है।

शहरी फैलाव एवं मलिन बस्ती की समस्या

इसे उपनगरीय फैलाव या शहरी अतिक्रमण के रूप में भी जाना जाता है। वास्तव में यह शहर के पास स्थित अविकसित भूमि पर शहरी विकास का प्रसार है। शहरी फैलाव का सबसे मुख्य कारण जनसंख्या में वृद्धि है। जैसे–जैसे शहरी जनसंख्या बढ़ती जा रही है स्थानिक समुदाय शहर से दूर–दूर केंद्रों में फैलते जा रहे हैं। जब शहरी फैलाव होने लगता है तो ऐसी स्थिति में सार्वजनिक व्यय में बढ़ा हुआ यातायात, स्वास्थ्य समस्याएं, स्वच्छता समस्या, पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होने लगती है।

कुल वार्ड	शहरी स्थानीय निकाय का क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	कुल जनसंख्या	कुल परिवार	कुल मलिन बस्ती संख्या	मलिन बस्तियों के परिवार की संख्या	कुल मलिन बस्ती जनसंख्या
36	53.94	197466	28598	25	2832	14896

(स्रोतः नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार)

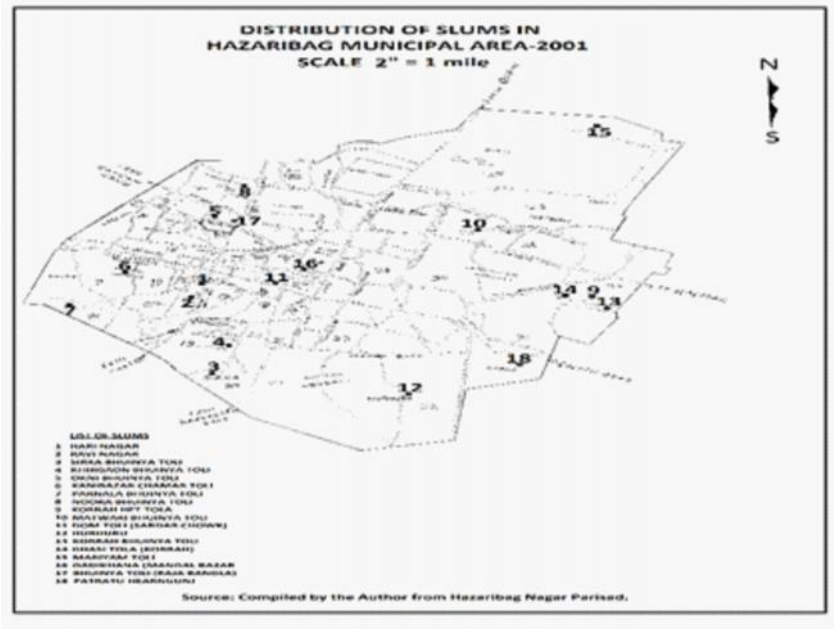

नए पर्यटक केंद्रों का विकास

जब जनसंख्या का प्रवास इन शहरी केंद्रों की ओर होने लगता है एवं निरंतर शहरीकरण की दर बढ़ने लगती है तो ऐसी स्थिति में नए–नए मनोरंजक एवं पर्यटक क्षेत्रों का विकास हो जाता है। वर्ष 2018 में पहले इस नगर निगम क्षेत्र में निर्मल महतो पार्क एवं स्वर्ण जयंती पार्क अवस्थित था, लेकिन वर्तमान समय में जनसंख्या के पर्यटन एवं मनोरंजन के लिए हजारीबाग झील क्षेत्र, जिला परिषद् पार्क एवं अनेक सुपरमार्केट का विकास किया गया है साथ ही कनहरी पर्वतीय क्षेत्र का विकास हुआ है। विनोबा भावे विश्वविद्यालय को शैक्षणिक मनोरंजन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है।

सुपरमार्केट और हाइपरमार्केट का विकास

हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में शहरी क्षेत्र अर्थात नगर निगम क्षेत्र में निरंतर जनसंख्या वृद्धि एवं आवश्यकता की पूर्ति के लिए ऐसे मार्केट का विकास किया गया है जिनमें विशाल मेगा मार्ट, वॉलमार्ट, स्वदेशी मॉल, सिटी प्लाजा, V2 शॉपिंग मॉल, मोहन बाजार मॉल, रिलायंस ट्रेड, भवानी प्लाजा मॉल, स्वदेशी नेक्स्ट, सिटी मैक्स, शॉपिंग सेंटर इत्यादि है।

बहुउद्देश्यात्मक अस्पताल का विकास

जब हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड में जनसंख्या का निरंतर विकास हो रहा है तो ऐसी स्थिति में दैनिक प्रवास, मासिक प्रवास स्वास्थ सुविधा को लेकर संपन्न हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए अनेक अस्पताल का विकास किया गया है। जिनमें निम्न हैः

- सदर अस्पताल, हजारीबाग।
- आरोग्यंम बहुउद्देश्यात्मक अस्पताल।
- संत कोलंबस मिशन अस्पताल।
- श्री रामकृष्ण सेवा केंद्र।
- डॉ. मनोज कुमार सिंह शिशु अस्पताल, हजारीबाग।
- न्यू लाइफ नर्सिंग होम अस्पताल।

- आन्नद अस्पताल पंच मंदिर।
- आशा अस्पताल रिसर्च सेंटर।

इनके अलावा छोटे–बड़े अस्पताल है जो स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निदान के लिए हमेशा तत्पर है।

आवासीय विकास

ग्रामीण समुदाय का प्रवास शहरी क्षेत्रों में विभिन्न गतिविधियों के कारण होने लगती है तो ऐसी स्थिति में शहरों के उपांत पेटी में आवासीय विकास होने लगता है। इन जनसंख्या का यहां दैनिक अस्थाई या स्थाई प्रवास होता है तो यहां निम्न मध्य और उच्च श्रेणी के रिहायशी मकानों का विकास होता है, ऐसी स्थिति में शहरों के खाली पड़े भूमि पर इनका विकास देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र मे प्रमुख आवासीय क्षेत्रों का विकास हुआ हैः

- सिंदूर एवं नावाडीह आवासीय क्षेत्र।
- विनोबा नगर आवासीय क्षेत्र।
- प्रेम नगर रिहायशी क्षेत्र।
- सारले एवं विकास नगर।
- दीपूगढ़ा रिहायशी क्षेत्र।
- मटवारी और कोर्रा एंव लाखे उच्च रिहायशी क्षेत्र।
- सुरेश कॉलोनी एवं जुलु पार्क रिहायशी क्षेत्र।
- देवांगना एवं धोबी तालाब एवं कॉलेज मोड़ के आसपास के मध्य रिहायशी क्षेत्र।
- कोलघट्टी, ओकनी, शिवपुरी आवासीय कॉलोनिया।
- खिरगांव एवं इमली चौक क्षेत्र।
- सिमरा रेस्ट हाउस एवं अन्य रिहायशी क्षेत्र।
- बड़ा अखाड़ा एवं रामनगर उच्च रिहायशी क्षेत्र।
- हीराबाग एवं डीवीसी कॉलोनी।

उपरोक्त आवासीय क्षेत्रों के अलावा भी अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहां निम्न स्तर मलिन बस्तियों का विकास हुआ है।

स्थानीय फुटपाथ विक्रेताओं का विकास

शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का जमाव होता है, साथ ही इनको रोजगार के साधन का पता नहीं चल पाता है तो यह जनसंख्या सड़कों के किनारे, चौक–चौराहे, अस्पताल, स्कूल–कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में लघु एवं स्वतंत्र उद्योग को स्थापित करने लगते हैं। यह स्थिति संपूर्ण शहरी क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

उपरोक्त सभी प्रभाव के फल स्वरुप हजारीबाग सामुदायिक विकास प्रखंड के हजारीबाग नगर निगम क्षेत्र के वर्त्तमान भूमि उपयोग के अलावा, जनसंख्या वृद्धि से समस्या की प्रवृत्ति को देखते हुए, नगर विकास एवं आवास विकास, झारखंड सरकार द्वारा प्रस्तावित 2040 का भूमि उपयोग प्रतिरूप तैयार की गई है जो शहर की सभी गतिविधियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

यह मास्टर प्लान आगामी 25 वर्ष की (2015 से 2040) के लिए अनुमानित जनसंख्या 5,55831 की विभिन्न आवश्यकताओं को मद्येनजर रखते हुए 95.17 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के दायरे में तैयार किया गया है जिसमें शहर का 44.88 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र सम्मिलित है। इसके अंतर्गत शहर में 55 वार्ड, दो जनगणना शहर और आसपास के 27 गांव को सम्मिलित किया गया है।

नगर निगम हजारीबाग का प्रस्तावित भूमि उपयोग प्रारूप (2040)

संख्या	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल		नियोजन क्षेत्र का प्रतिशत	किास क्षेत्र का प्रतिशत
		वर्ग किमी०	हेक्टेयर		
क.	**विकसित क्षेत्र**				
1.	आवासीय	47.81	4781	50.2	62.8
2.	वाणिज्यिक	3.08	308	3.2	4.0
3.	उद्योग	4.78	478	5.0	6.3
4.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	8.27	827	8.7	10.9
5.	परिवहन एवं संचार	7.08	708	8.2	10.2
6.	मनोरंजक खुली जगह	4.38	438	4.6	5.7
	उप–कुल क	76.11	7611	80	100
ख.	**अविकसित क्षेत्र**				
7.	प्राथमिक गतिविधि	12.98	1298	13.7	–
8.	जल क्षेत्र खुली जगह	4.67	467	4.9	–
9.	विषेष क्षेत्र	1.41	141	1.5	–
	उप–कुल ख	19.06	1906	20	–
	कुल खुली जगह(6+7+8)	22.03	2203	23.1	–
	कुल क+ख	95.17	9517	100	–

(स्रोतः नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार)

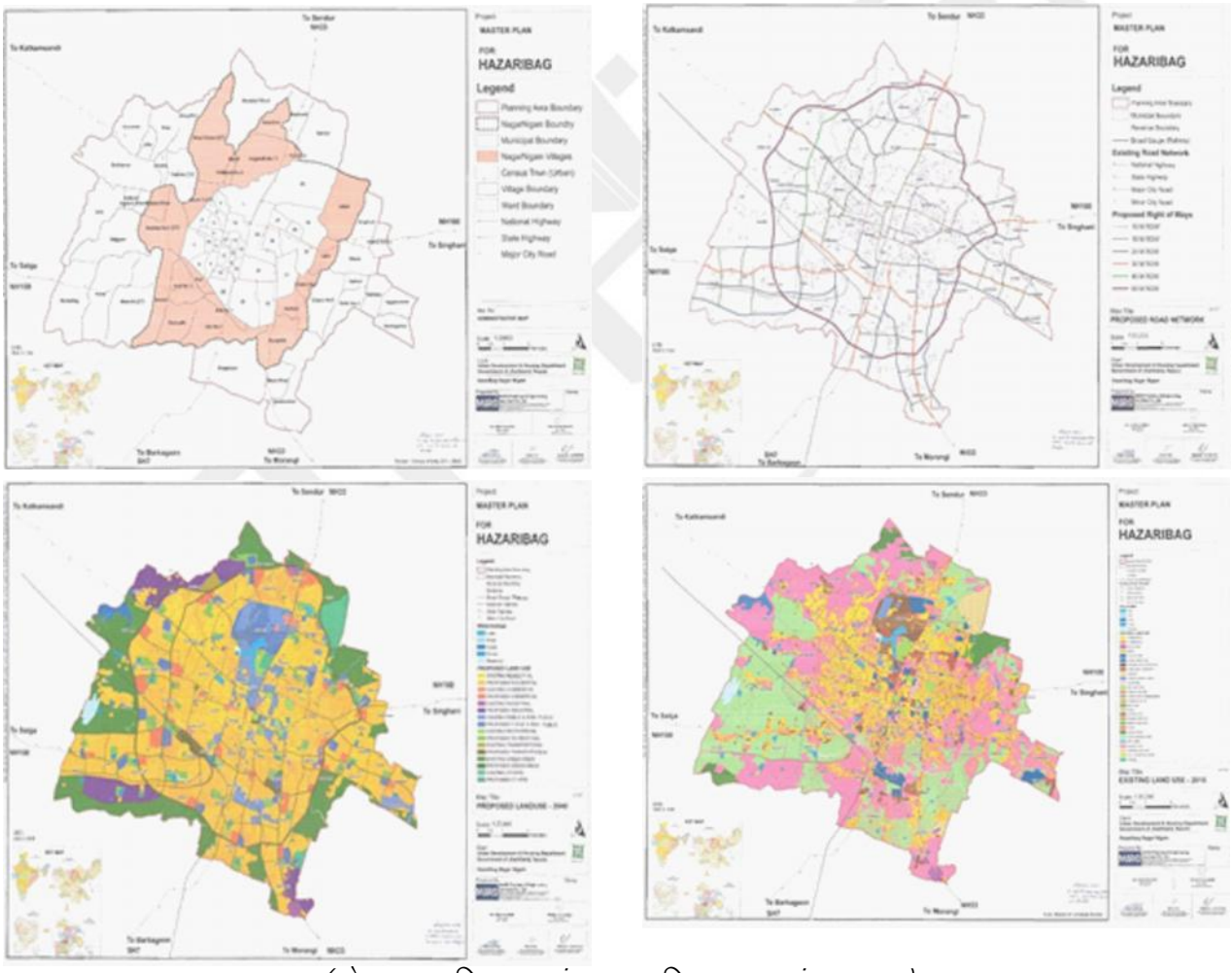

(स्रोतः नगर विकास एवं आवास विभाग, झारखंड सरकार)

निष्कर्ष

उपरोक्त संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास शहरी क्षेत्र की ओर होने का सबसे बड़ा कारण रोजगार एवं शिक्षा है। इसके उपरांत यहां व्यवसाय, मनोरंजन, पर्यटन, चिकित्सीय एवं मार्केटिंग शामिल है। जब यह ग्रामीण जनसंख्या शहर की ओर आते हैं तो शहरी भूमि उपयोग प्रारूप प्रभावित होता है। एक ओर ग्रामीण भू–भाग बंजर एवं परती होती जाती है, तो दूसरी ओर शहर में शहरीकरण में निरंतर वृद्धि होती है। साथ ही यहां आवास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

वर्ष 2015 से 2016 के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के शहरी भूमि अर्थात् हजारीबाग नगर निगम में आवास क्षेत्र (22.96 वर्ग किमी), वाणिज्यिक (0.49 वर्ग किमी) औद्योगिक (0.47 वर्ग किमी) में देखा गया। लेकिन शहरी क्षेत्रों में जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है तो उससे सरकार ने प्रस्तावित 2040 का मास्टर प्लान तैयार किया है और जो पूरे शहर क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रतिरूप को संदर्भित करता है।

अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण समुदाय के प्रवास से शहरी क्षेत्र की ओर जनसंख्या के आगमन से नगरीय या शहरी भूमि उपयोग प्रतिरूप प्रभावित होती है, साथ ही शहरों में नए–नए गतिविधियों का भी विकास होता है।

संदर्भ सूची

1. मौर्या, एस०डी० (2020): *"जनसंख्या भूगोल"* यूनिर्वसिटी रोड, प्रयागराज, शारदा पुस्तक भवन।
2. मौर्या, एस०डी० (2016): *"सामाजिक भूगोल"* यूनिर्वसिटी रोड, प्रयागराज, शारदा पुस्तक भवन।
3. Fatemi, Mohammed nawrase & Rahman, Tahmina (2015): "Regeneration of the Hazaribagh urban brown field: An imperative for Dhaka's sustainable urban development," urbaniizziv, Vol-26, NO-2
4. Kharat, U. Raju (2017): "urban land use classification and change detection analysis using Geospatial technology: *Journal for interdisciplinary studies*, vol-4/31 may - June
5. Sinha, Abhay Kumar (2016): "Impact of Rural-urban migration on urbanization" *Remarking*, vol-2, issue-ix, Feb-2016
6. Urban Development and Housing Department, No-06A/UD/Masterplan (Hazaribagh)-20/2015-4459, 13/07/2017
7. Verma, Vinita Sinha (2006): "Urbanization in Jharkhand past and present", Indian Geographical Foundation, Calcutta.
8. Verma, Shalini (2017): "Pattern of land use, land efficiency and land disparity in land holding in coastal Odisha", Annals of the the national association of Geographers India, vol-1, No-02, 2017
9. www.hazaribag.nic.in
10. udh.jharkhand.gov.in

****